21वीं सदी के बदलते परिदृश्य में स्त्री विमर्श

अमित शुक्ल
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी
शा. ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय
रीवा (म.प्र.)

सारांश

स्त्री विमर्श विचार करते हुए स्त्री विमर्श शब्द की संक्षिप्त व्याख्या आज कल स्त्री विमर्श (वुमेन डिस्कोर्स) के पर्याय के रूप में लिया जाता है। डिस्कोर्स शब्द का अर्थ है, अभिव्यक्ति बोलना या अपनी बात को दूसरे तक संप्रेषित करना, जीवन जीने का एक सार्थक तरीका। पुरूष के सत्तात्मक समाज में स्त्री गूंगी थी, उसने साहित्य के माध्यम से बोलना सीखा और अपनी भाषा को गढ़ा। और पुरूष की भाषा से मुठभेड़ किया। हमारा विश्व और हमारा समाज तीव्रगति से बदल रहा है, जिसे समीक्षक जेट स्पीड परिवर्तन भी कहते हैं। आज के क्षण में दूसरे क्षण को देखें तो परिवर्तन दिखाई देगा। बाजारवाद और वैश्वीकरण, जीवन मूल्यों का निर्णायक होता जा रहा है जिसमें भारतीय समकालीन मूल्यों की खोज कठिन दिखाई देती हैं। इसी व्यापक आयाम में समकालीन साहित्य में नारी संवेदना का स्वरूप और पक्ष खोजना और निर्धारित करना हमारा उद्देश्य हैं। समाज में रहकर पारिवारिक व्यवस्था में स्त्री के लिए अजीब सी त्रासदी है कि यदि वह पूरा अधिकार लेती है तो रिश्ता टूटता है और रिश्ता रखती है तो अधिकार छूट जाता है। स्त्री विमर्श के समर्थकों को इस प्राणतत्व को समझना चाहिए मीडिया और आज की स्त्री के बीच संवेदना की खोज की जा चुकी है, लेकिन मीडिया के माध्यम से स्त्री के देह के सौन्दर्य में ही सीमित रखा गया है, कनु प्रिया ने लिखा है, कि मीडिया की स्त्री सुन्दर है, चाहे वो सांवली हो, या गोरी हो, काली हो कैसी भी हो, अगर स्त्री देह है तो सुन्दर है, मीडिया का यह स्वरूप नारी की संवेदना से दूर–दूर तक नहीं जोड़ा जा सकता।

मुख्य शब्द : स्त्री विमर्श, आधुनिकता,भूमंड लीकरण, नारी संवेदना,हिन्दी साहित्य, जागरूकता,

प्रस्तावना

स्त्री विमर्श विचार करते हुए स्त्री विमर्श शब्द की संक्षिप्त व्याख्या आज कल स्त्री विमर्श (वुमेन डिस्कोर्स) के पर्याय के रूप में लिया जाता है। डिस्कोर्स शब्द का अर्थ है, अभिव्यक्ति बोलना या अपनी बात को दूसरे तक संप्रेषित करना, जीवन जीने का एक सार्थक तरीका। देखा जाए तो अनेक वर्षों से स्त्री विचार के केन्द में रही, जीवन व साहित्य दोनों में ही।स्त्री सशक्तिकरण, स्त्री विमर्श,स्त्रीत्ववाद की धाराएं, उपधाराएं,पूर्व की स्त्री, पश्चिम की स्त्री, सशक्त स्त्री, अबला स्त्री, बुरी स्त्री, स्त्रीत्वादी चिंतन, चिन्ता, चुनौतियां। स्त्री के लिए निर्धारित मापदंड और किसी भी खांचे में फिट नहीं होना चाहती स्त्री अपने आसपास देखती रही सबल स्त्री की समाज में खलनायक छवि कमजोर स्त्री के शोषण की प्रबल संम्भावनाओं के बाद भी उसके प्रति दया भाव, सहानुभूति।अपने लिए जगह बनाती स्त्री को परिवारभंजक माना गया। शिक्षित, कामकाजी स्त्री, और घर में उससे अपनी मॉ की सी परम्परागत छवि और भूमिका की मांग। स्त्री पैसा कमाए, गहने बनवाये, तुड़वाए, पर अपनी सम्पत्ति का अधिकार चाहे तो वो खलनायिका सी प्रतीत होती है। प्रसिद्व शायर मजाज की ये पंक्ति कि – तू इस आंचल को परचम बना लेती तो अच्छा था, स्त्री विमर्श आंचल को परचम बनाने की प्रक्रिया है। 60 के दशक से स्त्री विषय चाहे वोटों की राजनीति हो, साहित्य जगत हो, या घर बाहर की बात हो आज का हर वर्ग स्त्री विमर्श पर अपना विचार बड़ी निर्भीकता से रख रहा है। सवाल ये है कि स्त्री विमर्श के माध्यम से जिस स्त्री की चर्चा की जा रही है, उस स्त्री के बारे में हम या आप कितना जानते हैं। क्या हम उसे हृदय की गहराइयों से जान पाते हैं जिसकी चर्चा कर रहे हैं। उनकी समस्याओं पर विचार कर जो समाधान बताये जा रहे हैं, क्या उन समस्याओं का समाधान हो रहा है। आदि अनेक ऐसे ज्वलंत प्रश्न हैं। स्त्री विमर्श आज समाज समाजिक एवं

साहित्य का एक ज्वलंत मुद्दा बना हुआ है। कुछ अपवादों को छोड़कर सन् 1960 में स्त्री विमर्श के संबधों में हिन्दी साहित्य में चर्चा तों हुयी पर कम हुयी। आज के वैश्वीकरण एवं भूमंडलीकरण के इस दौर में वर्तमाान समय में अनेक चुनौतियां है। देखा जाए तो आज के युग में विष्व को किसी भी साहित्य में नारी विषयक दृष्टि पुरूष और नारी रचनाकार के कारण अलग दिखाई देती है। आज के भारतीय हिन्दी साहित्य में इस समय जिन मुद्दों को उठाया जा रहा है, उनमें स्त्री विमर्श प्रमुख है। विमर्श कहने का चलन वैचारिक, सैद्वान्तिक संदर्भो में नई वैचारिकी की देन है, जिसे संकेत विज्ञान कहा जा सकता है। इसके अंतर्गत संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद, विचारवाद, आधुनिकतावाद, उत्तर आधुनिकतावाद, जैसे वैचारिक आन्दोलन समाहित है। विमर्ष का तात्पर्य है तर्कयुक्त वार्तालाप जो वक्ता और श्रोता के मध्य पूर्व कल्पनाओं पर आधारित होता है, जो उसे उसकी विशिष्ट हैसियत प्रदान करता है। जब वर्णन के अन्तर्गत व्यक्ति की अवधारणा समाहित हो जाए तथा जब श्रोता एवं रचनाकार का संबध स्थापित हो जाए तो इस तरह के वर्णन को विमर्श नाम दिया जाता है। स्त्री विमर्श आज ऐसा चिन्तन है कि जिसमें स्त्री को केन्द्र में रखकर परम्परागत पितृ सत्तात्मक मूल्यों की दुबारा समीक्षा की गयी है। जैसे– जैसे नारी की निरीह स्थित में बदलाव आया वह अबला से सबला की ओर अग्रसर होती हुई अपने अधिकारों के प्रति सजग हुई। उसकी समझ व संवेदना का विस्तार हो जाने से उसके आंसू आग बनकर अन्याय के खिलाफ घर की चारदीवारी के खिलाफ बरसने लगते और तअ आसमान की उंचाईयों में अपने विस्तार को वे तलाशने लगती हैं। स्त्री विमर्श के अन्तर्गत आल स्त्री आंदोलन स्त्री आधुनिकता, आर्थिक सामाजिक स्वायत्ता, स्त्री और भूमंडलीकरण, स्त्री अस्मिता, परिवार, निर्णय क्षमता में हस्तक्षेप, सांस्कृतिक परिवर्तन, स्त्री आरक्षण, बार बालाओं की समस्या, वैश्याओं का पुर्नवास, कन्या भ्रूण हत्या, दहेज उत्पीड़न, दहेज हत्या आदि कोई भी समस्या ऐसी नही जिसे टाला न जा सके। स्त्री विमर्श सीधे लेखिकाओं के ज्वलंत अनुभवों द्वारा ही सामने आ सका है। इस नये विमर्श में जो नये–नये प्रष्न मुद्दे उठने लगे हैं। उन्होंने इस दिशा में नवीन सम्भावनाओं के क्षितिजों को फैलाना शुरू कर दिया है। स्त्री की दुनिया में यह जो बौद्धिक, सांस्कृतिक जागरण है इसे कोई भी अस्वीकार नही कर सकता। स्त्री विमर्श में स्त्री चेतना के विविध आयाम, अन्याय का विरोध शिक्षा के प्रति जागरूकता, अधिकारों के प्रति जागरूकता, स्वावलम्बन की भावना, स्त्री अस्मिता, सामाजिक चेतना आदि उभरकर आये हैं। नयी संवेदना और क्रांति की भावना से युक्त स्त्रीवादी चिन्तन विश्व साहित्य में एक नई दशा व दिशा की ओर उन्मुख कर दिया है।

स्त्री विमर्श साहित्य में– देखा जाए तो भारतीय हिन्दी साहित्य में सन् 1960 के आस– पास स्त्रियों की समस्याओं पर खुलकर विचार होने लगा और उनका समाधान भी। मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, मैत्री पुष्पा, मृदुला गर्ग, मृणाल पाण्डेय, सूर्यबाला, चित्रा मृदृगल, उषा प्रियवंदा, अनामिका, कुमकुम शर्मा, आदि अनेक लेखिकाएं हिन्दी साहित्य में अपनी लेखनी का लोहा मनवाया है। **पुरूष के सत्तात्मक समाज में स्त्री गूंगी थी,** उसने **साहित्य** के माध्यम से बोलना सीखा और अपनी भाषा को गढ़ा। और पुरूष की भाषा से मुठभेड़ किया। वैसे इस प्रक्रिया को रोकने के लिए अमेरिका से आई हुई ऋचा नागर ने साहस के तहत लिखना प्रारंभ किया वैसे कुछ लोग स्त्री के द्वारा जो कुछ लिखा जाता है, उसे स्त्री विमर्श का नाम देते हैं। यह न्यायसंगत नहीं है। जब स्त्री लेखिका स्त्रियों में होने वाले अन्याय, शोषण, और अनुचित संबंधों के विरूद्ध मुठभेड़ करती है, समाज को आंदोलित करती है तो वह स्त्री विमर्श का उदाहरण होता है। एक बात स्पष्ट है कि स्त्री विमर्श दैहिक शोषण के विरूद्ध अभियान या आन्दोलन है किन्तु दैहिक शोषण से भी भयानक मानसिक शोषण है। दमन शोषण के असंख्य भावों से छलनी स्त्री के तन मन और मस्तिष्क का लेखन ही स्त्री विमर्श हैं, ऐसा प्रसिद्ध हिन्दी लेखिका चित्रा मुदगल के विचार हैं, जो संगत होते हुए भी संशोधन की आवश्यकता रखते हैं। वास्तव में स्त्री विमर्श की आवश्यकता इसलिए महसूस हो रही है कि स्त्री सामाजिक दुरव्यवस्था के बीच में अग्निज्वाला की तरह विस्फोट करने लगी है। स्त्री के इस बदलाव में समाज के प्रति नकारात्मक सोच भी सम्मिलित है क्योंकि सामाजिक व्यवस्था की इस पूरी बनावट में स्त्री पूरी तरह संलिप्त है, उससे पूरी तरह निकलना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। अगर आज की स्त्री लेखिकाएँ यह मानकर चलती हैं कि वे इस व्यवस्था को एक झटके से बदल देंगी तो पूरी सामाजिक बनावट भी चरमरा जाएगी। इसलिए लेखिकाओं के मध्य में चिंतन किया जाना चाहिए उनकी सोच नकारात्मक है या सकारात्मक हैं। असल में चाहे मातृसत्तात्मक समाज में चाहे पुरूषसत्तात्मक समाज में आखिर स्त्री को यानी औरत को एक समाज में रहकर एक अदद उसे चाहने वाला पुरूष चाहिए और उसकी इज्जत करने वाला कम से कम एक अदद बच्चा भी। समाज में रहकर पारिवारिक व्यवस्था में स्त्री के लिए अजीब सी त्रासदी है कि यदि वह पूरा अधिकार लेती है तो रिश्ता टूटता है और रिश्ता रखती है तो अधिकार छूट जाता है। स्त्री विमर्श के समर्थकों को इस प्राणतत्व को समझना चाहिए। निश्चय ही नारी के हृदय का यह सूत्र हांथ लगने पर ही समाज में रहकर स्त्रीत्व के विमर्श को सार्थक कर सकता है। नारी संवेदना को केन्द्र में रखकर स्त्री विमर्श पर लिखी गई पुस्तकों को राजकुमार गौतम ने इस ढंग से विश्लेषित किया है, कि नारी के मानसिक और बाह्य जगत की हलचल उसकी अस्मिता से जुड़े प्रश्न परिवेश तथा वैचारिकता पर इसमें हिन्दी साहित्य के आधा इतिहास पर लिखी सुमन राजे की पुस्तक अत्यन्त गहराई से विवेचित की गयी है, इस पुस्तक में स्त्री अपने परिवेश का वर्णन तो करती है लेकिन देह के आकर्षण में आत्ममुग्ध नायिकाओं की तरह नहीं है। कई–कई जगह उनका आत्मबल प्रकट होता है। इससे आगे प्रभा खेतान की लिखी उपनिवेश में स्त्री स्वयं में नारी

मुक्ति और स्त्री विमर्श की कामना से छटपटाती पुस्तक है। विषय को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर तथा आधुनिक विचारकों के माध्यम से लेखिका ने खूब मथा और झिंझोड़ा हैं। नारी संवेदना और नारी आंदोलन में संघर्षरत रहने की मानसिकता का चित्रण भी है। वास्तव में यह पुस्तक स्त्री विमर्श के प्रतीक चित्र के रूप में है। स्त्री सरोकार पर लिखी गयी आशा रानी व्होरा की पुस्तक स्त्री विमर्श की चिन्ता को नारी आंदोलन के रूप में अच्छा खासा चित्रण करती है। लेखिका भारतीय नारी के संदर्भ में चिंतन करते हुए आधुनिक जीवन शैली का खुलकर चित्रण करती है। पुस्तक से स्पष्ट यह है कि हमनें ऐसा स्वार्थ और अर्थ केन्द्रित नारी समाज बना लिया है, जो संवेदना शून्य होता जा रहा है प्रभा खेतान के स्त्री चिंतन में स्त्री के अधिकारों को लेकर एक विवेकशील चिन्तक दिखाई देता है। स्त्री विमर्श में लिखी गयी आधुनिक पुस्तकों में से अत्यंत ही महत्वपूर्ण पुस्तक नासिरा शर्मा की लिखी हुयी औरत के लिए औरत पुस्तक में उनकी सम्यक लेखन की धुरी पर सामान्य स्त्री बैठी है, और औरत पर लिखे गए स्त्री विमर्श की महत्वपूर्ण धुरी के रूप में केन्द्रित है। ''स्त्री विमर्श के नाम पर वैचारिक छीना–छीनी के इस माहौल के विपरीत नासिरा शर्मा ने औरत के सम्मुख प्रस्तुत संघर्षों विडम्बनाओं और दुविधाओं का चित्रण किया है। व्यापक अध्ययन भ्रमण और सम्पर्को में लेखिका की टिप्पणियों और विश्लेषण को विशिष्ट बना दिया है, नासिरा की पुस्तक के अतिरिक्त मनीषा की पुस्तक हम सभ्य औरतें भी न्याय के आत्मबल और वंचित की पक्षधरता के आत्मविश्वास के चलते ऐसा दस्तावेज तैयार किया है, जो पात्रों को झनझना देता है, इनके अतिरिक्त उषा महाजन की बाधाओं के बावजूद नई औरत तथा क्षमा शर्मा की पुस्तक स्त्रीत्ववादी विमर्श–समाज और साहित्य और कुमुद शर्मा की स्त्री घोष पुस्तकें उल्लेखनीय हैं, इनसे यह तो प्रगट हो जाता है कि पुरूष वर्चस्व वाले समाज में स्त्री की समकालीन दशा और दिशा क्या है। नारी संवेदना की गति क्या है। इसका आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक पक्ष क्या है। स्त्री विमर्श और नारी संवेदना को केन्द्र में रखकर कुछ चर्चित उपन्यास भी लेखिकाओं द्वारा लिखें गये हैं। जिसमें से सोना चौधरी का उपन्यास पायदान एवं चर्चित लेखिका लवलीन का उपन्यास स्वप्न ही रास्ता है। रजनी गुप्त का उपन्यास कहीं कुछ और है एवं जयंती का उपन्यास आसपास से गुजरते हुए लेखिकाओं का प्रशंसनीय प्रयास है, लेखक निलय उपाध्याय का अभियान उपन्यास व आखर चौरासी का कमल, उपन्यास भी उल्लेखनीय है। दलित स्त्री विमर्श की ओर उन्मुख हों तो सबसे पहले फ्रांसीसी विद्वान मिशेल फूको का स्मरण हो आता है, जिन्होंने विमर्श का अर्थ शक्ति किया है। यह शक्ति ही दलितों का उद्धार कारक है। सबसे पहले उन्होने ही दलित विमर्श को जाति और स्त्री से जोड़ा, जब तक जाति का ताना बाना (नेटवर्क) नही टूटेगा तब तक दलित चाहे जाति के आधार पर हो, और चाहे सेक्स के आधार पर कोई सुधार नहीं हो सकता। इस पर गहराई से चिंतन होना चाहिए कि दलित जाति के आधार पर साहित्य में भी माने जायें, या लेखन या सृजन के आधार पर माने जाये। डॉ. रामविलास शर्मा ने इस बात का विरोध किया है कि दलित जाति के आधार पर माने जायेंगे या साहित्य के आधार पर, भारत में दलित आन्दोलन की चेतना के आधार स्तम्भ डॉ. अम्बेडकर ने स्पष्ट किया है कि जब तक जाति प्रथा इस देश से नहीं जायेगी, दलित बनते रहेगें, प्रताड़ित और पीड़ित होते रहेगें, उन्हीं के प्रेरक उद्‌बोधन के आधार पर दलित विमर्श का साहित्य लिखा गया है, भारत में सूरजपाल चौहान, श्यौराज सिंह बेचैन। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान के तुलसीराम प्रसिद्ध कवयित्री अनामिका जी तथा प्राध्यापक कृष्णदत्त पालीवाल, दलित स्त्री विमर्श के चिंतकों में माने जाते हैं। राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक स्तर पर रचे गये दलित स्त्री विमर्श के साहित्य को हाशिये पर पड़ा हुआ साहित्य नहीं माना जायेगा। श्यौराज सिंह वेचैन ने स्पष्ट किया है, कि भारत के दलितों में साहित्य और लेखन की वजह से पहले से अधिक जागरुकता आ गई है। अब दलित स्त्री मजबूती के साथ सामने वाले से मुकाबला कर सकती है। यद्यपि बहुत से लोग टिप्पणी करते हैं कि दलितों ने ही जातिवाद को फैला दिया, पिछड़ी जातियॉ आगे आयी है, और संगठित होकर जातिवाद के नये रूप को गढ़ा है, यह एक बड़ी सच्चाई है, दलित विमर्श को सुप्रसिद्ध लेखिका, अनामिका ने अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए लिखा है कि दुलिया में दो मूल दुःख है– एक क्षुधा यानी भूख और दूसरा अपमान नाम का जो दुःख है, वह अस्मिता विमर्श वाले अच्छी तरह समझते हैं, मुझे अक्सर लगता है, कि जो संबंध बाल्मीकि और सीता का था, वही दलित विमर्श और स्त्री विमर्श का होना चाहिए। बाल्मीकि ने सीता को संरक्षण दिया था, अभी धर्म और परिवार की बात हो रही थी, मुझे लगता है कि कई ऐसे शब्द है, जिनकी परिभाषा फिर से बननी है, ये परिभाषा कही और नहीं बल्कि सिर्फ स्त्रियों के यहॉ बनेगी। परिवार का दायरा बढ़ाना हो या विवाह को पुनर्परिभाषित करना हो, इसमें स्त्री की भूमिका अनिवार्य है, अनामिका का दृष्टिकोण सही है, कि समाज साहित्य और संस्कारों को स्त्री परिवर्तित कर सकती है, सूरज पाल चौहान ने दलित विमर्श के साहित्य की विषय वस्तु, ज्ञान, अनुभव सबको अलग–अलग माना है, और हिन्दी के पुराने सौन्दर्यशास्त्र से पृथक स्वीकार किया है। उनकी कविता का एक अंश है–

''कलात्मकता की दुहाई देकर,क्यों?मेरी कलम की स्याही, पोंछना चाहते हैं।

दलित स्त्री विमर्श के वर्तमान परिदृश्य पर लेखन का प्रारम्भ नारायण रवि ने किया था, जो निरन्तरता को प्राप्त होकर अब ऐसे बिन्दु पर पहुँच गया है, जहॉ से उसके सम्पूर्ण साहित्य का विवेचन किया जाना चाहिए। नारी संवेदना को केन्द्र में रखकर समकालीन साहित्य में इतना कुछ लिखा जा चुका है,

कि उसकी सीमा निर्धारित करना और उसके अंतिम दौर तक पहुंचना कठिन हो गया है। कविता, कहानी, उपन्यास, नुक्कड़ नाटक, लघु कथा आदि के द्वारा समकालीन साहित्य को कई–कई पायदानों में किया गया है, भारतीय भाषाओं के समकालीन साहित्य में भी नारी संवेदना के चित्र विविध विधाओं में देखने को मिलते हैं, विविध आयामों में उनका विश्लेषण किया गया है। मीडिया और आज की स्त्री के बीच संवेदना की खोज की जा चुकी है, लेकिन मीडिया के माध्यम से स्त्री के देह के सौन्दर्य में ही सीमित रखा गया है, कनु प्रिया ने लिखा है, कि मीडिया की स्त्री सुन्दर है, चाहे वो सांवली हो, या गोरी हो, काली हो कैसी भी हो, अगर स्त्री देह है तो सुन्दर है, मीडिया का यह स्वरूप नारी की संवेदना से दूर–दूर तक नहीं जोड़ा जा सकता। मध्ययुग और आधुनिक युग के प्रारंभ की स्त्री में आन्तरिक सौन्दर्य की खोज अधिक हुई है, देह के सौन्दर्य की कम। इसलिये मीडिया विश्वसनीय नहीं है। समसामयिक साहित्य में विस्तार पाये हुये स्त्री संवेदना के आयामों में पत्रकारिता और जमीन से जुड़ी हुई स्त्री का संवेदन भी शामिल है, पत्रकारिता में स्त्री ने उन कोमल और पुरूष दोनों संवेदनाओं को चुना है, जो पत्रकारिता को नये–नये आयामों के बीच में ले जाती है, चाहे वो हरिजन आदिवासियों के अनपढ़ बालकों का संदर्भ हो, चाहे कोठियों में पलने वाले बाल श्रमिकों का करूण जीवन हो, नारी की पत्रकारिता के संस्पर्श से अछूती नहीं है।

21वीं सदी के बदलते परिदृष्य में स्त्री विमर्श, उनके साहित्य के विशेष संदर्भ में

21 वीं सदी के साहित्य के स्त्री विमर्श में कुछ चर्चित नाम हैं जिन्होंने आज के साहित्य में अपनी विशेष छवि स्थापित की है उनमें हैं, सुषमा बेदी, ज्योत्सना मिलन, डॉ. कृष्णा अग्निहोत्री, डॉ सरोजनी प्रीतम, नाटकों के क्षेत्र में भारतीय नारियों में लोकप्रिय नाम–गिरीश रस्तोगी, अर्चना, वर्मा, डॉ. कमल कुमार, डॉ. भावना, शैलजा सक्सेना, स्नेह ठकोर, पुष्पिता अवस्थी, अर्चना पैन्यूली, संजीता वर्मा, डॉ. इंदिरा आनंद, रेणु, राजवंशी गुप्ता, रेखा मित्रा, नीना पाल, सत्यभामा, आडिल, क्षमा शर्मा, रति सक्सेना, दिव्या माथुर, उषा राजे सक्सेना, तोषी अमृता, पूर्णिमा बर्मन, डॉ. सुधा ओम ढींगरा, डॉ. इला प्रसाद, पुष्पा सक्सेना, सुदर्शन प्रियदर्शिनी, विधा बिंदु सिंह, सुधा, अरोड़ा, भी नाटकों के अलावा जो अन्य विधाओं में भी लेखन कार्य कर रहीं हैं, उनमें चर्चित नाम हैं–डॉ. सुशीला गुप्ता, अहिल्या मिश्रा, इंदू बाली, लक्ष्मी कुमारी चूड़खल, पद्मा सचदेव, सावित्री डागा, सुभदा पाण्डेय, राज बुद्धिराजा, उषा किरण खान, डॉ. शांति जैन, बुद्धिराजा, ऋता शुक्ला, डॉ. मधु धवन, डॉ. सत्यभामा आडिल, क्षमा शर्मा, रति सक्सेना दिव्या माथुर, उषा राजे सक्सेना, नीना पाल, शैल अग्रवाल, अचला शर्मा, कादंबरी मेहरा, पुष्पी भार्गव, डॉ. योगेश्वरी शास्त्री, इला कुमारी, मीनाक्षी जोशी, सुधा अरोड़ा, डॉ. राजम नटराजन, तेजी ग्रोवर, सुलभा कोरे, शील निगम, मिथिलेश कुमारी मिश्र, मृदुला सिन्हा, सुखदा पांडेय, उर्मिला कोल, किरण घई, उषा ओझा, डॉ. शरद सिंह, डॉ. सुनीता खत्री वीणा सिन्हा, डॉ. अनुसुइया अग्रवाल, लतिका भावे, शकुंतला शर्मा, डॉ. स्वाति तिवारी नलिनी शर्मा, शकुंतला तरार, सुधा वर्मा, अलका पाठक, डॉ. उर्मिला शिरीष मधु कांकरिया, शर्मिला बोहरा जालान, अरूणा कपूर, उषा जायसवाल, उलका सिन्हा, गीता श्री, इंदिरा मोहन, गीतांजलि श्री, बंदना राग, जयंती रंगनाथ, कानन, भींगन कमला। रश्मि रमानी, डॉ. आशा पाण्डेय, डॉ. दीप्ति गुप्ता, डॉ. मधु बरूआ, डॉ. स्मिता मिश्र, कुसुम अंसल, मनीषा, मृदुला हालन, डॉ. प्रेमलता नीलम, पैमिली मानसी, प्रभा शर्मा, डॉ. सरिता शर्मा, डॉ. पूनम शर्मा, रीतारानी पालीवाल, सविता सिंह, उषा महाजन, सुजाता चौधरी, वर्तिका नंदा, अंजु दुआ जैमिनी, धोरा खंडेलवाल, गीतिका गोयल, मधु संधू, मधुर कपिला, रेखा राजवंशी, बूलाकार, सीमा गुप्ता, नमिता राकेश, पद्मा शर्मा, डॉ. कामिनी, नीलेश रघुवंशी, निर्मल मुराड़िया, रंजना जायसवाल, रमा सिंह, नीरजा माधव, इरा सक्सेना, डॉ. मीना अग्रवाल, नमिता सिंह, मधु चतुर्वेदी, कात्यायनी, नीरजा द्विवेदी, आभा गुप्ता ठाकुर, अलका प्रमोद, डॉ. मुक्ता, डॉ. अंजना सुधीर, प्रिया अग्रवाल, जोहरा अफजल, स्वर्ण ज्योति डॉ. सुप्रिया पी आदि भारतीय नारियों ने हिंदी साहित्य के लेखन में अपनी महत्वपूर्ण जगह बनाली है। इस प्रकार नारी लेखन की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है।

निष्कर्ष यह है कि कल की गिनी चुनी महिला साहित्यकार आज बड़े बेबाकी से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहीं हैं। कहानी, उपन्यास, कविता, आत्मकथा, संस्मरण, तथ्यपरक रिपोर्टों के माध्यम से नारी लेखन के जागरूक और संवेदनशील सार्थक हस्तक्षेप करने वाले विविध आयाम आज दिखाई दे रहे हैं। वरिष्ठ पीढ़ी की लेखिकाओं में जहाँ उनके लेखन में मध्यमवर्गीय निम्न मध्यवर्गीय समाज के जिन सरोकारों को सीमित स्थान दिया था वहीं आज की लेखिकाओं में विस्तार पा रहा है उनके लेखन में आत्मविश्वास की पैनी धार और शिल्प में भी परिपक्तता आई है। आज की लेखिकाओं में जो बात सामने आ रही है वह है खुलापन, समाज व्यवहार बदल रहा है, औरत बदल रही है नारी के खुलेपन, का आकाश और बोल्ड होने की अकुलाहट की इबारत नारी लेखन की नई बिसात और चाहत में तब्दील है, आंचल में है दूध और आंखों में है पानी की तस्वीर अब उलट गई है, यह तासीर, यह तस्वीर अपने नए तेवर में उपस्थित है। भारतीय नारी की तेज लेखनी की धार से सब्जियों की तरह कटते जा रहे हैं, तमाम पारिवारिक, सामाजिक और मानसिक बंधन नारी मुक्त हो गई है। दिल से दिमाग से और देह से भी चाहे जो भी हो पर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य नारी लेखन के माध्यम से अत्यन्त समृद्ध हुआ है, ये हर क्षेत्र की तरह साहित्य में भी अपनी उपस्थिति सशक्त ढंग से दर्ज करा रही हैं, वे निरन्तर साहित्य सृजन में आगे आ रही हैं। नारी लेखन की नई पीढ़ी अच्छा काम कर रही है। नारी शक्ति, नारी साहित्य, नारी चेतना को सामाजिक परिवेश में उभारा जा रहा है सवाल जन्मजात रचनात्मकता का है, एक

संवेदनशील परिवेश का है जिसमें नारी पुरूष से एक कदम आगे है। आधुनिक साहित्य में नारी का रचनात्मक योगदान बहुत अधिक है। राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर अपनी लेखनी से आज की भारतीय नारी धूम मचा रही है। वही उन महिला रचनाकारों की भी संख्या अधिक है जो किसी राज्य के सुदूर कस्बे या छोटे शहरों में रहकर हिन्दी की अहर्निश सेवा में रत हैं। साहित्य ही नहीं अकादमिक, और साहित्येत्तर विधाओं में भी उन्होंने अपनी कलम का लोहा मनवाया है। आज से 50 वर्ष पूर्व सबसे पहले दो लेखिकाओं सोमा वीरा और सुनीता जैन ने अमेरिका के साहित्य से विश्व को परिचित करवाया था, पर आज भारतीय नारियों में हिंदी लेखन के प्रति रूझान बढ़ रहा है। भारतीय नारियां चाहे देश में रहें या विदेश में इन लेखिकाओं ने भारत को गौरवान्वित किया है। प्रवासी भारतीय महिला लेखिकाओं में पहला नाम उषा प्रियवंदा का है जिसका विदेश में पहला कहानी संग्रह एक कोई दूसरा किसी प्रवासी हिंदी महिला रचनाकार की पहली रचना बनी। आज ये महिलाएं अपनी लेखनी से हिंदी साहित्य को समृद्ध करने के साथ ही साथ हिंदी के प्रचार–प्रसार का भी स्तुत्य प्रयास कर रही हैं। देखा जाए तो साहित्य में नारी उत्थान की वकालत लंबे अरसे से की जा रही है अब उसे और घार देने की जरूरत है। इतना सब कुछ होते हुए भी आज भी भारतीय नारी को समाज में हाशिए पर ही जगह दी जाती है। ऐसी सामाजिक मानसिकता में बदलाव जरूरी है। सामाजिक बंधनों से मुक्ति दिलाने में शिक्षा स्वयंसेवी संस्थाओं, रचनाकारों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। कुल मिलाकर शिक्षा ने भारतीय नारियों को जागरूक बनाया है। प्रत्येक क्षेत्र में दखल के साथ–साथ साहित्य में भी महिला सशक्तिकरण का दौर आ चुका है। अब वह कल की भारतीय नारी अबला नहीं रही सबला हो चुकी है क्यों कि नारी **'कोमल है कमजोर नहीं,शक्ति का नाम ही नारी है।सबको हिम्मत देने वाली,मौतभी तुझसे हारी है।कोमल और कमजोर समझकर जिसको सबने देखा है वह कमजोर नही शक्तिशाली है, सभी गुणों की अवतारी है।**

संदर्भ ग्रंथ

1. दि संडे राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार पत्र दिल्ली, नोएडा, देहरादून से प्रकाशित उत्तराखण्ड संस्करण, 20–02–2011 लेख–सृजन संसार के अंतर्गत डॉ अमित शुक्ल, रीवा पृष्ठ – 20
2. 2. महिला सशक्तिकरण, भाग 1, ओमेगा पब्लिकेशन दरियागंज नई दिल्ली संपादक, डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव लेख–डॉ. अमित शुक्ल पृष्ठ 133,155
3. महिला सशक्तीकरण दशा एवं दिशा, संपादक–अखिलेश शुक्ला, गायत्री पब्लिकेशन रीवा, लेख–डॉ. अमित शुक्ल, पृष्ठ – 519
4. भारत में ग्रामीण विकास – संपादक डॉ. अखिलेश शुक्ल, संध्या शुक्ला,गायत्री पब्लिकेशन रीवा लेख–डॉ. अमित शुक्ला– पृष्ठ 78,
5. नई सहस्त्राब्दी का महिला सशक्तीकरण भाग 3 संपादक–डॉ वीरेन्द्र सिंह ओमेगा पब्लिकेशन नई दिल्ली–लेख–डॉ अमित शुक्ल पृष्ठ 20
6. आउटलुक, पाठक साहित्य सर्व मासिक पत्रिका जनवरी 2011 सफदरजंग नई दिल्ली पृष्ठ 56, 59
7. आजकल साहित्य और संस्कृति की मासिक पत्रिका मार्च 2011 सूचना भवन लोदी रोड नई दिल्ली पृष्ठ 45, 47
8. 'अक्षर पर्व' देशबन्धु–प्रकाशन विभाग रायपुर छत्तीसगढ़ पृष्ठ 33
9. द संडे इंडियन विशेषांक सितंबर 2011 गौतम बद्ध नगर नोएडा उत्तर प्रदेश पृष्ठ 34, 36
10. जनसत्ता समाचार पत्र नई दिल्ली – 2 मार्च 2010 पृष्ठ – 05
11. स्वयं का सर्वेक्षण व निष्कर्ष।